Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Peer Reviewed, Refereed)

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

भारतीय संगीत में हारमनी के प्रयोग का औचित्य–अनौचित्य

डॉ० मधु शर्मा

सरांशः–

भारतीय संगीत मे हारमनी का प्रयोग तब से शुरु हुआ जब विदेशी संस्कृति भारत में आयी तब उन्होंने अपने मनोरंजन हेतु भारतीय संगीत के साथ गायन तथा वादन में कुछ प्रयोग किये जिन मे हारमनी का प्रमुख स्थान है। तीन या दो स्वर जब आपस मे बजते है तब वह हारमनी का रूप लेती है। हारमनी हमारे प्राचीन गायन, साम गायन की तरह है। हारमनी का प्रयोग हमारे फिल्मी संगीत में प्रचुर मात्रा में मिलता है जो कि बहुत ही प्रभावशाली रहा जिस कारण भारतीय संगीत में हारमनी का प्रयोग चमत्कारिकता के रूप में होने लगा। इसके साथ ही हारमनी संगीत भारतीय संगीत के क्षेत्र में अपने अस्तित्व को स्थापित करने मे कायम रहा है। वृंदवादन से लेकर समूहगान तक की विद्याओं में हारमनी ने प्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया है। चलचित्र में दिये जाने वाले संगीत में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु आज भी कुछ संगीतज्ञ भारतीय संगीत में हारमनी के प्रयोग के विरुद्ध है क्योंकि उनका मानना है। कि भारतीय संगीत जो अध्यात्म से जुड़ा तथा मेलॉडी प्रधान है। हारमनी भारतीय संगीत के मौलिक स्वरूप को हानि पहुँचाता है।

भारत की सम्पन्नता से आकर्षित होकर ही अन्य विदशी जातियाँ प्राचीनकाल से ही यहा पर आती रही। उनके सम्पर्क का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ा। यहां के संगीत के गायन, वादन और नृत्य आदि रूप भी इन प्रभावों को ग्रहण करके समयानुसार परिवर्तित विकसित होते रहे।[1] अभी कुछ समय पूर्व ही पाश्चात्य सभ्यता ने भारतीय संस्कृति मे अपना पग रखा है। भारत में अंग्रेंजों के पर्दापण तथा उनकी सत्ता प्राप्ति के साथ पाश्चात्य सभ्यता का सूत्रपात हुआ था। पाश्चात्य सभ्यता का यह बीजांकुरण धीर–धीरे पल्लवित, पुष्पित हुआ तथा उसकी शाखाएं भारतीयता में फैल गई। वैज्ञानिक विकास ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रचार–प्रसार को एक नया मोड़ दिया है। रेडियो, ट्रांजिस्टर, टेप–रिकार्डर, ग्रामोफोन, सी.डी. प्लेयर, कम्प्यूटर आदि ने बीसवी भाताब्दी की प्रथम पांच दशाब्दियों में इनके माध्यम से पाश्चात्य संगीत को भारत की सांगीतिक मौलिकता ने आत्मसात कर लिया। चित्रपट तथा दूरदर्शन ने इस दिशा में विशेष भूमिका निभाई है। पाश्चात्य सभ्यता की चमक–दमक ने भारतीयों को विशेष आकृष्ट किया सांस्कृतिक आदान–प्रदान की नीति ने भी पाश्चात्य संस्कृति को भारत भूमि पर लाकर खड़ा किया। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित तथा उससे अभिप्रेरित लोगों ने इसे अपनाने में कोई संकोच नहीं किया बल्कि इसे विकास का एक चरण ही मान लिया।[2] भारतीय संगीत क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा।

भारतीय संगीत मूलतः मेलॉडिक है, उसमें स्वर लगाने का एक विशेष ढंग होता है। यह भावनात्मक होता है, जिसमें स्वरों की कड़ी टूटती नहीं है। कभी वह अस्थिर चलता है, कभी कंपित

Asstt. Prof. , Department of Music (Vocal), S. D. College, Ambala Cantt
e-mail: dr.madhugautam1@gmail.com | Phone No. 8053957539, 8950257966

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

होता है तो कभी आंदोलित।

भारतीय संगीत के पूर्णतः विपरीत ही पा चात्य संगीत 'हारमनी' के लिए विशेश रुप से प्रसिद्ध है। सामुहिक गायन–पद्धति के कारण पाश्चात्य संगीतकारों ने इस पद्धति को अपनाकर इसे विकसित किया। हारमनी के जन्म के विषय में यह कहा जा सकता है कि ईसाई–गिरिजाघरों में इसका जन्म मध्यकाल में हुआ। गिरिजाघरों में संगीत गायन के कारण इस नवीन पद्धति का निर्माण हुआ। उनके गिरिजाघरों में मेलॉडी की छटा आज भी दृष्टिगोचर होती है। जब कई लोग मिलकर एक साथ गिरिजाघरों में प्रार्थना गायन करते, इनमें सभी के के गायन का स्वर भिन्न–भिन्न सप्तक के थे। किसी की मन्द्र स्वर की, तो किसी की तीव्र स्वर की। महिलाओं की ध्वनि इससे भी कुछ ऊँची। इस कोलाहल में कई वर्शो के बाद व्यवस्था एवं एकसूत्रता स्थापित की गई। प्रार्थना धुन को अलग–अलग स्वरों के स्वर–संवाद पर स्थापित किया गया। कोई मध्य सा, कोई गांधार, कोई पंचम तो कोई तार सां' के आधार पर अपनी अनूकुल आवाज के अनुसार गाने लगे। इसी प्रकार हारमनी का उद्‌भव हुआ।

पश्चिमी संगीतकारों ने एक स्वर के स्थान पर दो अन्य संवादमय स्वरों को जोड़ा अर्थात् एक ही स्वर–समूह अथवा संवाद स्थापित करने वाले स्वरों को एक साथ गायन–वादन की प्रथा आरम्भ की।

अतः हारमनी की परिभाषा में हम यह कह सकते है कि दो या दो से अधिक स्वरों को एक साथ गाने या बजाने से उत्पन्न मधुर ध्वनि को हारमनी या स्वर–संवाद कहते है। उदाहरण स्वरुप 'सा–प' या सा–ग' स्वरों को एक साथ बजाने से हारमनी की रचना होगी। जब हम किन्हीं दो अथवा दो से अधिक स्वरों को एक साथ बजाएं तो जो उन स्वरों की सम्मिलित ध्वनि जो उत्पन्न होगी, उसे कॉर्ड कहते हैं। जब इन्हीं 'कॉर्डस' को मिश्रण धुनों के साथ निरंतर बजाया जाए तो इस प्रक्रिया से ध्वनि उत्पन्न होगी, उसे 'हारमनी' कहेंगे।

सत्रहवीं शताब्दी तक 'हारमनी' शब्द का प्रयोग सामान्यतः संगीत की ध्वनि के अर्थ में किया जाता था। 'जारलिनो' ने सर्वप्रथम इसका प्रयोग संगीत के विस्तृत अर्थ में किया। आज 'हारमनी' शब्द का अर्थ स्वर की सरंचना, क्रिया और कॉर्डस के साथ सम्बन्ध को स्वीकारा जाता है। सन् 1636 में सर्वप्रथम 'मर्सेन' ने इस अर्थ का निरुपण किया। 'हारमनी' की सर्वप्रथम इकाई 'कार्ड' को माना जाता है। The unit of Harmony is the Chord. The smallest element of harmonic progression or movement consists of two chords.[3]

जिस प्रकार भारतीय संगीत मे गायक राग–सौन्दर्य की दृष्टि में विभिन्न स्वर–गुच्छों का प्रयोग अपनी कल्पना– शक्ति के आधार पर करता है, उसी प्रकार पाश्चात्य संगीत में कलाकार अपनी रचना को आकर्शक बनाने हेतु विभिन्न स्वर–समुदयों से मुख्य धुन का संवाद स्थापित करता है। मेलॉडी में जहां स्वरों का क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण आवश्यक है, वहीं हारमनी में उनका एक साथ सामुहिक गान या वादन अनिवार्य हैं। मेलॉडी को जब चाहे कोई गा–बजा सकता हैं, परन्तु हारमनी के लिए अन्य गायकों या वादकों पर निर्भर रहना पड़ता है।

जैसा की पूर्व कथित है कि अन्तःकरण की कल्पनाओं का उदय केवल मेलॉडी में सम्भव है जबकि बाह्यभाव को प्रस्फुटित करने के लिए हारमनी आवश्यक है। मेलॉडी का जन्म स्थान मानव–ह्रदय है जबकि हारमनी मानवह्रदय को प्रभावित करती है। मेलॉडी का कार्य हारमनी से बिल्कुल भिन्न है। हारमनी के द्वारा प्रभाव बाहर से अन्तःकरण तक पहुंचता है जबकि मेलॉडी मे

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

उसे ह्रदय से बाहर प्रकट किया जाता है।

हारमनी का मूल आधार मेलॉडी ही होता है। और उसी के ऊपर विभिन्न स्वरों के द्वारा हारमनी उत्पन्न की जाती है। इसीलिए कहा गया है–"Harmony is the Clothing of Melody."

भारतीय संगीत पूर्णतः मेलॉडी प्रधान है तथा आध्यात्मिकता से पूर्णरुपेण जुड़ा है। 'राग' भारतीय संगीत का आधार है जिसका वर्धन कल्पना भाक्ति के द्वारा सम्भव है। कण, तान, मींड, गमक इत्यादि राग के प्रमुख अलंकरण है। कण स्वरों का लगाव भारतीय संगीत की विशेषता है। इसका अर्थ है मुख्य स्वर से पहले कुछ क्षण के लिए किसी अन्य स्वर का उच्चारण करना। इन कण स्वरों के कारण मुख्य स्वर मे एक विशेश प्रकार की 'लोच' का निर्माण होता है व वि ोश माधुर्य की उत्पत्ति होती है। इन कण स्वरों का हारमनी के रुप में प्रयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे राग का मूल स्वरूप नष्ट हो जाएगा।

इसी प्रकार 'मीड' भारतीय संगीत की अन्य वि ोशता है इसमें दो स्वर एक दूसरे से अलग होते हुए भी एक ही प्रतीत होते है। इसमें एक स्वर से दूसरे स्वर पर पहुंचने के लिए बिना ध्वनि को खण्डित किए दूसरे स्वर का उच्चारण किया जाता है। यह संयोग इस प्रकार किया जाता है कि एक स्वर कब प्रारम्भ हुआ तथा दूसरा कब शुरु हुआ पता ही नहीं चलता।

हारमनी – रे–
सा–
मेलॉडी (मींड) . रे–सा

हारमनी के द्वारा यह स्वर सौन्दर्य पूर्णत नष्ट हो जाएगा। इसी प्रकार भारतीय संगीत में राग का अलंकार तानें हैं। इसके अन्तर्गत बनने वाले स्वरों के मोड़ भी इसी प्रकार हारमनी द्वारा सम्भव नहीं हो सकते।

हारमनी में कोई भी स्वर दूसरे स्वर के साथ सूक्ष्म मोड़ से नहीं जोड़ा जाता। सभी स्वर एक दूसरे से अलग रखे जाते है। इसके विपरीत भारतीय संगीत में स्वर एक दूसरे के साथ लावण्यता के साथ समाहित होते हैं जो कि इसकी प्रमुख वि ाश्टता है। मेलॉडी में एक समय में एक ही स्वर, लेकिन संस्कारित तथा सूक्ष्मता के साथ लगाना पड़ता है। जबकि हारमनी मे स्वर का स्थूल स्वरूप होता है। विलियम जॉन के अनुसार :– "Our boosted harmony, with all its fine accords and numerous parts, paints nothing, expresses nothing, says nothing to heart, but give more or less pleasure only to the senses.[4]

जबकि भारतीय संगीत आत्मा से जुड़ा है। भारतीय भाास्त्रीय संगीत में हारमनी के प्रयोग से उसका मूल रागत्व ही नष्ट हो जाएगा। फिल्मी संगीत व सुगम संगीत में हारमनी का प्रयोग अवश्य होने लगा है क्योंकि वह भाास्त्रीय नियमों से मुक्त है। सामुहिक गायन तथा वाद्य वृन्द में हारमनी स्वतः उत्पन्न हो जाती है।

"The Music of Hindustan" esa Fox strange way ने भारतीय संगीत के स्वरूप को व्यक्त करते हुए बड़ी मार्मिकता एवं अध्ययनशीलता से भारतीय तथा पाश्चात्य संगीत का तात्विक विवेचन किया है: "The first thing, that harmony would do, if applied to Indian Music, would be to get rid of the feeling, the grace of notes and all that which makes Raga worth having. To add harmony to it, is to kill it and there seems to be no way of understanding the Indian Music except to set to work and learn its language.[5]

Vol. 10 No. 1-2, March-Sep. 2019
ISSN : 0976-0237
UGC Approved Journal No. 40903
Impact Factor 3.765

अतः कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत के अभिजात शास्त्रीय संगीत प्रकार में हारमनी का प्रयोग सर्वथा वर्जित ही समझना चाहिए। सुगम संगीत तथा चलचित्र संगीत में इसका उपयोग करना ही अधिक उचित प्रतीत होता है। क्योंकि इसमें हारमनी के द्वारा स्वर वैचित्र्य उत्पन्न करके बंदिश को आकर्षित तथा उत्कृष्ट बनाया जाता है। क्योंकि इनका प्रथम उद्देष्य श्रोताओं का मनोरंजन करना होता है। इसलिए इनमें भाास्त्रीय नियमों का पालन आवश्यक नहीं है। गायक जैसे चाहे वैसे अपनी रचना को आकर्षक बना सकता है। पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित आज का युवा वर्ग इन पाश्चात्य धुनों अर्थात् हारमनी प्रधान संगीत की ओर विशिष्ट रूप से आकर्षित रहा है।

सन्दर्भ सूचीः–

1. डॉ. शर्मा बी. एल., भारतीय संगीत पर विदशी प्रभाव, विश्व संगीत, अंक जनवरी–फरवरी, 1986, पृ. 25, संगीत कार्यालय, हाथरस
2. डॉ. पाण्डे आशा, भारतीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत के प्रभाव को औचित्य विवेचन–संगीत, मई 1996, पृ. 4, संगीत कार्यालय, हाथरस
3. डॉ. शर्मा उमा भांकर, संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में, पृ. 202, प्रथम संस्मरण, 2001, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
4. गर्ग लक्ष्मी नारायण, पृ. 75, निबन्ध संगीत, 1978, संगीत कार्यालय, हाथरस
5. Strangways A.H.Fox, The Music of Hindostan, Page 163, Oxford University Press 1966.